दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-III (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/19(N-M)-HL-**HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): ANKIT MISHRA

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | ✓ |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): III (8th January 2019)

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ankit

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।
औनै घटा आई चहुँ फेरी। कंत उबारु मदन हौं घेरी।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जोऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त काव्यांश मलिक मुहम्मद जायसी कृत "पद्मावत" नामक ग्रंथ के "नागमती वियोग" नामक खण्ड से उद्धृत है। यहाँ नागमती अपने पति "रत्नसेन" के सिंहल द्वीप चले जाने पर व्यथित है और अपनी मनोदशा का वर्णन कर रही है।

व्याख्या → ~~नागमति~~ नागमती कहती है कि असाढ़ (गर्मी) का माह खत्म हो गया है और बरसात का समय निकट है। "पुरव नछत्र" (पुष्य नक्षत्र) बिल्कुल निकट है और फिर बारिश भी अधिक होने ~~लगी~~ लगेगी। उसका पति बाहर है इसलिए उसका घर भी अभी तक छाया नहीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हुआ है और उसकी छत टपकेगी, ऐसे में कौन उसकी मदद करेगा।

काव्य-सौंदर्य → नागमती एक सामान्य स्त्री न होकर चित्तौड़ की महारानी है और "छत टपकने" या "मकान खड़ी करवाने" की समस्या सामान्य तौर पर उसे नहीं है। परंतु पति-वियोगिनी के रूप में वह किस तरह से छोटी-2 और सामान्य चीजों को याद करती है वह उसके विरह को वर्णन को अति विशिष्ट बना रहा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन बच क्रम नँदनंदन सों उर यह दृढ़ करि पकरी।।
जागत, सोवत, सपने सौंतुख कान्ह कान्ह जक री।
सुनतहि जोग लगत ऐसो अलि! ज्यों करुई ककरी।।
सोई व्याधि हमैं लै आए देखी सुनी न करी।
यह तो सूर तिन्हैं लै दीजै जिनके मन चकरी।।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त काव्यांश सूरदास कृत तथा आ॰ रामचंद्र शुक्ल द्वारा संकलित "सूरसागर" से उद्धृत है। इस प्रसंग में उधो कृष्ण का संदेश लेकर वृंदावन आए हैं और गोपियों को योग का पाठ पढ़ा रहे हैं जिसके उत्तर में गोपिया उन्हें बताती हैं कि किस तरह उन के मन कर्म और वचन में कृष्ण बसे हुए हैं।

व्याख्या → गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण उनके मन में, वचन में और कर्म में निरंतर समाए रहते हैं तथा जगते-सोते वे कृष्ण के ही सपने देखती हैं। ऐसे में उधो ~~से~~ उन्हें योग का पाठ पढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं तो ~~उसे~~ उन्हें ऐसा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लग रहा है जैसे ऊधो उनके दुख और विरह कि अनदेखी कर रहे हैं। उन्हें यह भी शक होता है कि शायद कृष्ण ने ऊधो के साथ भी मजाक किया है उन्हें वृंदावन भेजकर

काव्य सौंदर्य → गोपियों का

यह कहना कि कृष्ण सोते जागते उनके सपने में रहते हैं तथा वे मन, क्रम वचन से नंद को प्रेम करती हैं। कृष्ण का प्रेम उनके हृदय में उस तरह गड़ गया है जैसे टेढ़ी लकड़ी जो निकाले नहीं निकल रही हो। प्रेम में यह भोलापन सूर साहित्य को अतुलनीय बना देता है। साथ ही गोपियों के मासूम तर्क भी अत्यंत शोभनीय हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) सायक-सम मायक नयन, रंगे त्रिविध रंग गात।
झखौ विलखि दूरि जात जल, लखि जल-जात लजात।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पैदा हुआ अभिमान पहले चित्त में निज शक्ति का,
जिससे रूका वह स्त्रोत सत्वर शील, श्रद्धा, भक्ति का।
अविनीतता बढ़ने लगी, अनुदारता आने लगी,
पर-बुद्धि जागी, प्रीति भागी, कुमति बल पाने लगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त काव्यांश राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित भारत-भारती से लिया गया है। यहाँ कवि इस बात की चर्चा कर रहे हैं कि किस प्रकार महान भारतवर्ष पतन की ओर अग्रसर हुआ।

व्याख्या → गुप्त जी कहते हैं कि अपनी उत्कृष्टता का अहंकार भारतीयों में सबसे पहले पैदा जिसकी परिणति यह हुई कि उनमें शील, श्रद्धा और भक्ति के जो उच्च गुण थे वे समाप्त हो गए तथा लोग अविनीत और अनुदार हो गए। और के प्रति अपने पन का भाव उनमें खत्म हुआ, लोगो के प्रति प्रेम या लगाव भी खत्म हुआ और परिणाम स्वरूप लोगों में बुरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मति (बुद्धि) या कुमति अधिकाधिक मजबूत हुई

काव्य सौंदर्य → मैथिलीशरण गुप्त जी लेखन मुख्यतः अभिधात्मक शैली में ही रहा है। यहां भी वैसा ही है।

- अपने इतिहास के प्रति रोमानियत का भाव भी इसमें नजर आता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'कबीर के यहाँ भक्ति के दो भिन्न एवं विरोधी मार्ग एक दूसरे में घुल गए हैं।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में कबीर के काव्य का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर काव्य पूर्णतमा: ~~काव~~ कबीर के व्यक्तिगत जीवन के अनुभव और उनकी अवलोकन व विश्लेषण करने की उच्च योग्यता पर आधारित ~~3~~ है। कबीर शिक्षित नहीं हैं; उन्होंने श्रुति मार्ग के द्वारा ही अपने विचारों का निर्माण किया है और उनके ये विचार ही उनके काव्य में परिलक्षित होते हैं। जैसे-2 कबीर कुछ नया सीखते गए हैं, वैसे-2 ही उनके विचारों में बदलाव आता गया है और वैसे-2 ही बदलाव ~~उनकी कविताओं~~ उनके काव्य में भी।

कबीर की पालन पोषण नाथ-पंथियों और योगपंथियों के बीच हुआ तो उन्होंने वहाँ से उनके रहस्यवाद जैसे गुण लिए जो उनकी उलट बाँसियों में दिखता है-

"बरसैगी कंबली भिजैगा पानी"

तत्पश्चात कबीर योगमार्ग छोड़कर सगुण भक्ति की ओर बढ़ते हैं तथा निर्गुण और सगुण के मध्य सामंजस्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्थापित करने के कोशिश करते है परंतु बाद जाकर निर्गुण के प्रचण्ड समर्थक हो जाते हैं।

"दशरथ सुत तिहुं लोक बखाना,
राम नाम को मरम न जाना।"

कबीर नें भक्ति का मार्ग रामानुजाचार्य से सीखा जो कि सगुण राम के समर्थक थे। कबीर नें रामानुज से राम का नाम तो लिया पर उसे अपनी नई पहचान "निर्गुन राम" के रूप में अपनाया।

कबीर की शुरुआती परंपरा योगियों और नाथों की थी तथा बाद में वे भक्ति का मार्ग अपनाते हैं। ये दोनों ही मार्ग एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न और विरोधी हैं। परंतु कबीर नें इन्हें एक साथ मिला लिया है। वे योगियों का "रहस्यवाद" भी अपनाते हैं और भक्तों की "भावनात्मकता"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी और दोनो को मिलाकर अंततः "भावनात्मक रहस्यवाद" की ओर आगे बढ़ते हैं।

इसी प्रकार निर्गुण और सगुण के बीच में भी वे दोनो को मिलाकर एक नया रूप तैयार करते हैं — "निर्गुण राम" ये दोनो सामान्यतः एक दूसरे से विपरित ही थे परन्तु कबीर के काल में यह एक ही हो गए हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि श्रुति मार्ग के अनुयायी कबीर नें भक्ति के उन दो मार्गो को एक में घुला दिया है जो एक दूसरे से भिन्न और विरोधी थे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में प्रयुक्त फैंटेसी शिल्प के स्वरूप और औचित्य पर प्रकाश डालिये। 15

मुक्तिबोध ~~ब्रह्मराक्षस~~ मूलतः एक प्रगतिवादी कवि हैं और प्रगतिवादी कवि शिल्प के प्रति उदासीन रहते हैं। परंतु मुक्तिबोध का मत है कि उचित कथ्य के लिए उचित शिल्प का होना भी जरूरी है। पश्चिम में भी इसी प्रकार की संशोधित मान्यता जार्ज लुकाच ने दी है

"ब्रह्मराक्षस" कविता में मुक्तिबोध नें फैंटेसी शिल्प का प्रयोग किया है। फैंटेसी ~~[illegible]~~ वह ~~[illegible]~~ होती है जहाँ हम सामान्य जीवन में अनुपलब्ध चीज की स्वप्न या कल्पना में प्राप्ति करते हैं।

वस्तुतः प्रगतिवादी कवि होने के नाते मुक्तिबोध अनिवार्यतः अपनी कविताओं में कुछ ऐसी चीजों की प्रस्तुति करते हैं जो

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनके विचारों से तो संगत हैं पर भारतीय समाज से संगत नहीं हैं। उदाहरण स्वरूप "हिंसक क्रांति" भारतीय समाज का सत्य नहीं है; अतः इसकी अभिव्यक्ति के लिए फैंटेसी शिल्प की आवश्यकता है।

इसी प्रकार कविता में मुक्तिबोध ने मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के मन के यथार्थ को पकड़ने की कोशिश की है जो कि एक अमूर्त विषय है। ऐसे अमूर्त विषय की अभिव्यक्ति के लिए फैंटेसी शिल्प सहायक सिद्ध हुई।

साथ ही यथार्थ सदैव गतिशील एवं परस्पर गुंफित होता है जिससे कविता का आकार बहुत अधिक बढ़ जाने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की संभावना रहती है। फैंटेसी शिल्प के प्रयोग की वजह से बिना किसी क्रम की परवाह के कविता को ढेका रखकर भी अपनी बात कह पाने में कवि को सफलता मिली है।

अतः यह कहा जा सकता है कि "ब्रह्मराक्षस" कविता में व्यक्त भावों के लिए फैंटेसी शिल्प का प्रयोग उचित ही है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) 'असाध्य वीणा' के आधार पर अज्ञेय की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिये। 15

अज्ञेय भाषा और शब्दावली के प्रति सदैव सजग रहने वाले रचनाकार है जो यह मानते हैं कि व्यक्ति की सोचने की क्षमता उसकी शब्दावली और भाषा पर भी निर्भर करती है।

परंतु अज्ञेय के यह विचार उनकी कविताओं में कभी कीआंतिक रूप में नहीं आते हैं न ही वे शब्द चयन को लेकर पूर्वाग्रही होते हैं।

"असाध्य वीणा" कविता जापानी पौराणिक कथा पर आधारित है तथा इस पर ज़ेन बौद्धमत का स्पष्ट प्रभाव दिखता है। कविता में भावों के अनुरूप ही शब्दावली का चयन किया गया है।

अज्ञेय गंभीर विचारक भी →

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हैं तथा व्यक्ति की स्वतंत्रता व सृजनात्मकता उनके चिंतन के मूल में ही हैं। "असाध्य वीणा" भी मनुष्य की सृजनात्मकता की पड़ताल करती है। ऐसे सूक्ष्म विषयों को व्यक्त करने के लिए तत्सम शब्दावली का प्रयोग अधिक हुआ जो कि अपेक्षित भी है, परंतु इसके बावजूद तद्भव शब्दावली भी उचित मात्रा में है।

अज्ञेय शब्दों का अपव्यय न करने वाले कवि हैं। वे शब्दों के प्रति मितव्ययी हैं। ऐसा ही उन्होंने असाध्यवीणा में भी किया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. (क) 'भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर सामने आया हो।' गोस्वामी तुलसीदास लोकनायकत्व की इस कसौटी पर कहाँ तक खरे उतरते हैं? 20

भारत वर्ष वैविध्य से परिपूर्ण देश है। इस विविधता के बीच यदि कोई लोकनायक बन सकता है तो उसकी सबसे पहली और संभवतः सबसे प्रमुख शर्त है समन्वय करने की क्षमता। यह बात आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी गोस्वामी तुलसीदास के समय में भी।

तुलसीदास जी का समय कई विरोधाभासी और भिन्नता वाले चीजों की सहउपस्थिति का काल है। उनके समय में हिंदू और मुस्लिम; निर्गुण और सगुण; राम भक्त और कृष्ण भक्त; शैव और वैष्णव आदि-2 भिन्न धर्म, पंथ, संप्रदाय, विचार आदि सशक्त रूप से उपस्थित थे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उ. तुलसीदास जी ने इन सभी में समन्वय किया। शैव और वैष्णव के बीच के भेद को उन्होंने अपने काव्य में शिव को विष्णु का भक्त और विष्णु को शिव का भक्त दिखाकर स्थापित किया। यह समन्वय अद्भुत था।

सदैव एक दूसरे का विरोध करने वाले निर्गुण और सगुण समर्थकों को उन्होंने "अगुनहिं - सगुनहिं नहिं कछु भेदा" का पाठ पढ़ाया।

राम भक्त और कृष्ण भक्त को वे एक साथ यह कहकर लाते हैं कि ये दोनों ही "विष्णु के अवतार" हैं।

इसके अतिरिक्त तुलसीदास जी के काव्य में उन्होंने कुछ सामाजिक मुद्दों पर भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विस्तार से प्रकाश डाला है जो कि सभी धर्मों, पंथों और सम्प्रदायों के लोगों को समान रूप से कष्ट पहुँचा रही थी। भुखमरी, गरीबी, आदि ऐसी चीजें हैं जिन पर तुलसीदास जी की लेखनी खूब चली है।

राजा कैसा हो? कलियुग कैसा होगा? आदि-2 चीजों को उन्होंने सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में रखा।

- "कलि बारहिं बार अकाल पड़ै, निज अन्न दुखी सब लोग मरै।"
- "जासु राज नहिं प्रजा दुखारी, ता नृप निवस नकि अधिकारी।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन बातों की आधार पर कहा जा सकता है कि तुलसीदास जी ने अपने काव्य में समन्वय की अद्भुत मिशाल प्रस्तुत की है। उन्होंने न सिर्फ "विरोधियों में सामंजस्य" स्थापित किया है बल्कि उन चीजों पर भी लिखा जो सभी के लिए समान रूप से महत्व की थी।

अतः गोस्वामी तुलसीदास जी इस आधार पर एक लोकनायक हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'अपनी मूल प्रकृति में पद्मावत एक त्रासदी हैं।' -आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

त्रासदी (ट्रेजेडी) पाश्चिमी साहित्य समीक्षा का तत्व है जिसको भारतीय समीक्षा में भी प्रयोग होता है। इसके तत्व मूलतः पाश्चिमी साहित्यिक चिंतन पर आधारित हैं परंतु भारतीय साहित्यिक चिंतन के अनुसार बदले हुए स्वरूप में यदि पद्मावत का मूल्यांकन करें तो यह एक त्रासदी ही है।

पद्मावत का नायक रत्नसेन एक उच्च कुल का नायक है जो कि प्रेम जैसे उदात्त भाव से प्रेरित है और प्रेम प्राप्ति के लिए अनेक कष्ट सहते हुए भी सिंहलद्वीप पहुँचता है। पद्मावती से विवाह पश्चात वापस आने पर वह अपनी पूर्व पत्नी नागमती और नई पत्नी पद्मावती के बीच सामंजस्य और सामरस्य स्थापित करवाता

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

है और सबकुछ ठीक तरीके से चलता रहता है।

परंतु सिंहलद्वीप से आए व्यक्ति को राजदरबार से निकालना और उसे जीवित छोड़ देना उसकी एक गलती होती है जो बाद में अलाउद्दीन खिलजी से उसके संघर्ष की पृष्ठभूमि तैयार करता है। इसी क्रम में पद्मावती और नागमती जौहर करती हैं और रत्नसेन की मृत्यु हो जाती है तथा सबकुछ एक दुखद अंत पर खत्म होता है।

अतः पद्मावत अपने मूल प्रकृति में एक त्रासदी ही है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कामायनी के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामायनी हिंदी साहित्य का एक महाकाव्य है पर यह पारंपरिक महाकाव्य के पैमाने पर नहीं मापा जा सकता है। चूंकि महाकाव्य के पैमाने का आधार रामायण है तथा इसके पैमाने समकालीन ही हैं, परंतु कामायनी की कथा उसके बहुत पहले की है। इसके लिए नए पैमानों की आवश्यकता पड़ी। डॉ० रामविलास शर्मा ने "कामायनी: एक पुनर्विचार" में उन पैमानों पर चर्चा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की है। इसमें वर्णित पैमानों के आधार पर कामायनी एक महाकाव्य है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) न मिटै भवसंकट, दुर्घट है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो।
कलि में न बिराग, न ज्ञान कहूँ, सब लागत फोकट झूँठ जटो।
नट ज्यों जनि पेट-कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुख चाहिय तौ, रसना निसिबासर राम रटो।।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त काव्यांश गोस्वामी तुलसीदास कृत 'कवितावली' से उद्धृत है और यहाँ वे बताते हैं कि कलियुग में क्या होगा और उन विषम स्थितियों से बचने के लिए क्या करना चाहिए।

व्याख्या → तुलसीदास जी कहते हैं कि कलयुग में वैराग्य और ज्ञान कहीं भी नहीं होगा और लोग झूठ-मूठ ही वैराग्य और ज्ञान की बातें करेंगे। ये बिल्कुल नाटक के नट की तरह ही ज्ञान का नाटक करेंगे। स्वयं पर संकट गिरने का नाम नहीं लेगा और यह समय बहुत कठिन कठिन होगा और ऐसे में यदि सदा सुख की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामना है तो यह आवश्यक है कि निरंतर राम नाम का जप किया जाए

काव्य - सौंदर्य → जिस प्रकार से रामचरितमानस में गेयता है उस प्रकार की गेयता का यहां अभाव दिखता है।

- अटो - जटो - ठटो - रटो आदि शब्दों की वजह से कुछ हद तक लयात्मकता सध पाई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) बरु वै कुब्जा भलो कियो।
सुनि सुनि समाचार ऊधौ मो कछुक सिरात हियो।।
जाको गुन, गति, नाम, रूप, हरि हार्‌यो, फिरि न दियो।
तिन अपनो मन हरत न जान्यो हँसि हँसि लोग जियो।।
सूर तनक चंदन चढ़ाय तन ब्रजपति बस्य कियो।
और सकल नागरि नारिन को दासी दाँव लियो।।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त काव्यांश सूरदास कृत तथा आ० रामचंद्र शुक्ल द्वारा संकलित "सूरसागर" से उद्धृत हैं। यहाँ कुब्जा का उदाहरण देकर गोपियाँ ऊधो को और कृष्ण को उलाहना देती हैं।

व्याख्या → गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण ने कुब्जा का तो भला किया पर हमें ज्ञान का मार्ग दिखा रहे हैं यह सुनकर मन में कसक होती है। वे हरि जिनके गुण, नाम और रूप (सौंदर्य) की चर्चा सर्वत्र है उन्होंने कुब्जा और अन्य नगर की नारियों को भी दर्शन दिए, उनपर उपकार किया, पर यहाँ से जाने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के बाद उन्होंने हमें दर्शन नहीं दिया

काव्य-सौंदर्य → " दियो-लियो-कियो- लियो-जियो-कियो - लियो " शब्दों की आवृत्ति से लयात्मकता सध पाई।

- प्रेम में गोपियों का कुब्जा के प्रति ईर्ष्या भाव अति सुंदर बन पड़ा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि।
ए जिहिं रति, सो रति मुकति, और मुकति अति हानि।।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त पंक्तियाँ रीतिकालीन कवि "बिहारी लाल" की "बिहारी सतसई" से उद्धृत हैं।

व्याख्या

काव्य सौंदर्य → भाषा की समाहार क्षमता बिहारी की पहचान है और यही कार्य बिहारी ने इस दोहे में भी किया।
• एक ही दोहे में सात वाक्यों के बराबर के अर्थ का संप्रेषण कर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी ने "गागर में सागर" भरने का काम किया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा।।
तरिवर झरहि झरहि बन ढाखा। भइ ओनंत फूलि फरि साखा।
करहिं बनसपति हिये हुलासू। सो कहँ भा जग दून उदासू।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि तन लाइ दीन्ह जस होरी।।
जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत-मरत मोहि रोष न आवा।।
राति-दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।
यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव।।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त काव्यांश मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत के नागमति वियोग खण्ड से उद्धृत है। अपने पति रत्नसेन के सिंहलद्वीप प्रवास के दौरान नागमती अपने मनोभावों का वर्णन कर ~~रह~~ रही है।

व्याख्या → उपरोक्त पंक्तियों में प्रकृति में आसपास की चीजों की व्याख्या एक वियोगिनी की दृष्टि से करती है जिसे हर चीज बस जलती हुई ही प्रतीत होती है। वह कामना करती है कि इसी जलन में वह भी जल जाए और उसके शरीर की राख को पवन

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उड़ाकर ले जाए और मार्ग पर फैला दे जहाँ उसके पति के पाँव पड़ने वाले हैं या जिस मार्ग से वो वापस लौटने वाले हैं।

काव्य-सौंदर्य → एक पति-वियोगी के रूप में कवि ने नागमती का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है। एक महारानी जिसकी सेवा के लिए अनेकानेक साधन और सेवक-सेविका प्रस्तुत हैं, वह भी पति के वियोग में अप्रत्याशित रूप से एक सामान्य मनुष्य की तरह व्यवहार करती है, यह अत्यंत मार्मिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कबीर के काव्य में उपस्थित रहस्यवाद के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) सूर की काव्य-कला के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वात्स

सूर का काव्य मुख्यतः कृष्ण की सख्य भक्ति का काव्य है जिसमें उन्होंने संयोग व वियोग श्रृंगार का वर्णन भी किया है।

सूर-काव्य बिंब निर्माण की दृष्टि से अनूठा है। सूर रचित पद चलचित्र के समान प्रतीत होता है

"घुटरुनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किए"

3. सूर का उपालंभ काव्य भी अपनी कोटि में अद्वितीय है। इसके अतिरिक्त भाषा के विकास की दृष्टि से भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आते विशेष है जिसके माध्यम से उन्होंने ~~ब्रज~~ ब्रजभाषा को चरमोत्कर्ष तक की यात्रा कराई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य क्यों होना चाहता है? विश्लेषण कीजिये। 15

'ब्रह्मराक्षस' कविता में 'ब्रह्मराक्षस' और उसका ~~[illegible]~~ 'शिष्य' या कवि दो मुख्य चरित्र हैं। ब्रह्मराक्षस पर "आदर्शवादी दबाव" और "व्यक्तित्ववादी आग्रह" के बीच एक के चुनाव की चुनौती है। दूसरी तरफ "कवि" जो कि ब्रह्मराक्षस का शिष्य था "सजल-उर-शिष्य" बनना चाहता है उसमें "सामाजिक यथार्थ" के नकार की भावना नहीं है। वह ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य बनकर उसे यह बताना चाहता है कि ब्रह्मराक्षस को सामाजिक यथार्थ का स्वीकार करते हुए आदर्शवादी दबाव और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

व्यक्तित्ववादी आग्रह के बीच सामंजस्य बनाना होगा।

कवि उसे यह भी बताना चाहता है कि उसने (ब्रह्मराक्षस) नें समाज के लिए काफी कुछ किया है और अभी भी कर ही रहा है, इसलिए उसे यह सोचकर परेशान होने की आवश्यकता नहीं है कि वह समाज और आदर्शों के लिए कुछ कर नहीं रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'बादल को घिरते देखा है' कविता के शिल्प पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

काव्यरूप → "बादल को घिरते देखा है" कविता एक लंबी कविता है; कुछ समीक्षक इसे अनुभूति परक लंबी कविता भी कहा है, क्योंकि यहाँ कवि ने सिर्फ सुनी-सुनाई बातें नहीं की है बल्कि चीजों को देखा है, अनुभव किया है -

"बादल को घिरते देखा है"

भाषा → कथ्य के अनुरूप भाषा मुख्यतः तत्समी है। हिमालय के औदात्य और सौंदर्य का उचित रूप से वर्णन करने के लिए ऐसी भाषा का प्रयोग किया गया है। जैसे

- "ऋतु बसंत का सुप्रभात था, मंद-मंद था अनिल बह रहा"
- "अमल-धवल गिरी के शिखरों पर बादल को घिरते देखा है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

• कुछ जगहों पर तद्भव तथा देशज शब्द भी प्रयोग हुआ है जैसे "पवन बह रहा"

• छंद / लय / गेयता → "देखा है"
शब्द की आवृत्ति की वजह से कविता में लय और गेयता सब पाई है। कुछ जगहों पर दूरांतर प्रवाही लय भी आश्रित है

Copyright – Drishti The Vision Foundation